International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 779-783

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(10): 779-783
www.allresearchjournal.com
Received: 19-08-2020
Accepted: 17-09-2020

डॉ0 सुषमा कुमारी
शिक्षक, +2 उच्च विद्यालय, खिरमा पथरा, दरभंगा, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
डॉ0 सुषमा कुमारी
शिक्षक, +2 उच्च विद्यालय, खिरमा पथरा, दरभंगा, बिहार, भारत।

भारतीय समाज में वृद्धों की समस्याओं के कारण एवं समाधान

डॉ0 सुषमा कुमारी

सारांश
समय के साथ साथ मानव प्रगति पथ पर बढ़ता जा रहा है। कहा जाता है परिवर्तन प्रकृति का नियम है.परन्तु मानव अपनी बौद्धिक क्षमता के सहारे से अनेक परिवर्तन करता आ रहा है। नित नयी सुविधाएँ जुटाना उसका लक्ष्य रहता है और उसकी यह लालसा उन्नति का कारण बनती है। आज मानव उन्नति के उस शिखर पर पहुँच चुका है, जहाँ से विकास की गति को पंख लग गए है। विकास की गति कहीं अधिक तीव्र हो गयी है, शिक्षा का प्रचार प्रसार तेजी से हो रहा है,शिक्षा से प्राप्त ज्ञान के कारण मानव का रहन सहन ,खान पान.एवं सोच में बड़े बदलाव आ रहे हैं । प्रत्येक व्यक्ति आधुनिक सुविधाओं से युक्त जीवन जीना चाहता है,अधिक से अधिक सुविधाएँ जुटा लेने की होड में लग गया है, इसी प्रतिद्वान्विता ने उसके सुख,चौन,शांति को छीन लिया है। वह तनावग्रस्त होता जा रहा है। उसकी सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन आये हैं । उसके कारण आज का युवा परंपरागत रूढियों ,दकियानूसी मान्यताओं को तोड़ डालना चाहता है. वह स्वच्छंद एवं स्वतन्त्र होकर जीना चाहता है.उसकी यही सोच बुजुर्गों को आहत करती है। आज के बुजुर्ग अचानक आये परिवर्तनों को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं । उसे अपने समय के जीवन मूल्य और आदर्श ही अच्छे लगते हैं । अतः वह इसके लिए नए जमाने और नयी पीढ़ी को दोषी मानता है । परन्तु नयी पीढ़ी उनकी सोच को,उनके सिद्धांतों को नकार देती है और पुरानी पीढ़ी से दूरियां बनाने लगती है,परिवार में सामंजस्य का अभाव उत्पन्न होने लगता है, जो घर में विद्यमान बुजुर्गों के लिए दुखदायी होता है।

शब्द संकेतः वृद्धावस्था, सामाजिक समस्याएँ, तनावग्रस्त एवं परिवर्तन

प्रस्तावनाः
इतिहास इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि प्राचीन काल में वृद्धों की सिथति अत्यंत उन्नत एवं सम्मानीय रही हैं। उन्हें समाज एवं परिवार में अलग वर्चस्व था। परिवार की समस्त बागडोर उनके हाथों हुआ करती थी। परिवार को कोई फैसला उनकी सलाह व मसविरे के आधार पर होता था। उन्हीं की सत्ता एवं प्रभाव के कारण पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे, वे परिवार के सदस्यों को एक धागे में बांधें रखते थे, परंतु भौतिकवादी युग में वृद्धों की समस्याओं का बढ़ना एवं समाज में उनकी उपयोगिता कम और समस्याएं बढ़ती नजर आ रही है। बुढ़ापा जीवन का अंतिम पड़ाव है और इस पड़ाव में जीवन असक्त हो जा है। कार्य करने की क्षमता कमजोर हो जाती है। भरण–पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। यही निर्भरता वृद्धों की समस्याओं की मूल हैं। शारीरिक एवं आर्थिक दृषिट से घुटन भरी जिन्दगी जीने को विवश हो जाती है। चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित क्यों न हो, इस अवस्था में उनकी गाड़ी चरमराने लगती है, वह युवा पीढ़ी से तालमेल नहीं बैठा पाते है, जिससे उनकी समस्याओं की वृद्धि हो जाती है। विश्व में समाज का बहुत बड़ा हिस्सा ऐसा है कि जहां वृद्धावस्था में अब सामाजिक एवं आर्थिक असुरक्षा के कष्ट झेलते है। युवा वर्ग वृद्धों को कोई महत्व नहीं देते हैं।
समय के साथ साथ मानव प्रगति पथ पर बढ़ता जा रहा है। कहा जाता है परिवर्तन प्रकृति का नियम है.परन्तु मानव अपनी बौद्धिक क्षमता के सहारे से अनेक परिवर्तन करता आ रहा है। नित नयी सुविधाएँ जुटाना उसका लक्ष्य रहता है और उसकी यह लालसा उन्नति का कारण बनती है। आज मानव उन्नति के उस शिखर पर पहुँच चुका है, जहाँ से विकास की गति को पंख लग गए है। विकास की गति कहीं अधिक तीव्र हो गयी है,शिक्षा का प्रचार प्रसार तेजी से हो रहा है,शिक्षा से प्राप्त ज्ञान के कारण मानव का रहन सहन ,खान पान.एवं सोच में बड़े बदलाव आ रहे हैं ।
प्रत्येक व्यक्ति आधुनिक सुविधाओं से युक्त जीवन जीना चाहता है,अधिक से अधिक सुविधाएँ जुटा लेने की होड में लग गया है, इसी प्रतिद्वान्विता ने उसके सुख,चौन,शांति को छीन लिया है। वह तनावग्रस्त होता जा रहा है। उसकी सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन आये हैं । उसके कारण आज का युवा परंपरागत रूढियों ,दकियानूसी मान्यताओं को तोड़ डालना चाहता है. वह स्वच्छंद एवं स्वतन्त्र होकर जीना चाहता है.उसकी यही सोच बुजुर्गों को आहत करती है। आज के बुजुर्ग अचानक आये

परिवर्तनों को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं । उसे अपने समय के जीवन मूल्य और आदर्श ही अच्छे लगते हैं । अतः वह इसके लिए नए जमाने और नयी पीढ़ी को दोषी मानता है । परन्तु नयी पीढ़ी उनकी सोच को,उनके सिद्धांतों को नकार देती है और पुरानी पीढ़ी से दूरियां बनाने लगती है,परिवार में सामंजस्य का अभाव उत्पन्न होने लगता है, जो घर में विद्यमान बुजुर्गों के लिए दुखदायी होता है।

यदि पुरानी पीढ़ी के व्यक्ति यह सोच लें की अब बच्चों का जमाना है,वे आधुनिक वातावरण में पैदा हुए हैं,अतः वे नए जमाने के अनुसार ही रहना पसंद करते हैं । दुनिया में परिवर्तन तो होने ही हैं,उन्हें कोई नहीं रोक सकता। जब इन बदलावों को रोक नहीं सकते तो समझदारी यही है की हम भी अपनी सोच में यथाशक्ति परिवर्तन लाने का प्रयास करें,ताकि नयी पीढ़ी से सामंजस्य बना पाने में सुविधा हो, और परिवार में बुजुर्गों का सम्मान बना रहे । परिवार का माहौल खुशनुमा बना रहेगा, बुजुर्गो का शेष जीवन सहज रूप से व्यतीत हो सके।

गत एक शताब्दी में मानव समाज ने अप्रत्याशित उन्नति की है मात्र सौ वर्षों के अंतराल में इंसान ने रेडियो.टीवी, कंप्यूटर ,वायुयान मोटरगाड़ी,बस,सी,डी, डी वी डी आदि अनेकों नयी नयी खोजें की हैं, जो आज हमारी आवश्यकताओं में शामिल हो चुके हैं । आज इनके बिना मानव जीवन की कल्पना भी असंभव लगती है। इस उन्नति ने जहाँ मानव को अनेक सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं ,तो दूसरी तरफ उनको पा लेने की होड़ ने सामाजिक ताने बाने को तोड़ कर रख दिया है। परंपरागत खेती बाड़ी ,दुकानदारी कारखाने आदि सभी व्यवसायों के रूप बदल चुके है। अब अधिक परिश्रम के कार्य नयी तकनीक के कारण अप्रासंगिक हो चुके हैं । अब श्रमसाध्य कार्य मशीनों द्वारा किये जाने लगे हैं । नयी नयी सुविधाओं और साधनों को पाने की ललक आज के युवा को अपने परंपरागत कारोबार छोड़कर दूर दराज के क्षेत्रों में जा कर नौकरी या रोजगार के लिए प्रेरित कर रही है। यातायात के नवीनतम साधनों अर्थात वायुयान,ट्रेन कार आदि की उपलब्धता ने युवा को कहीं भी जाकर रोजगार करना संभव बना दिया है। जिसने अंततः संयुक्त परिवार को एकल परिवार में परिवर्तित करने को मजबूर कर दिया है.युवा वर्ग के अपना गांव, शहर छोड़ कर दूर दराज के इलाकों में चले जाने के कारण घरों में वृद्ध अकेले रह गए हैं ।

पुरानी पीढ़ी के लोग नए परिवर्तन को न तो समझ पा रहे हैं और न ही स्वीकार कर पा रहे हैं । कमाई के नए साधनों के अनुरूप अपने आपको ढाल पाने में भी अक्षम हैं । अतः उनके पुराने कारोबार सफेद हाथी साबित होने लगे हैं । बढते खर्चों के सामने वे अपनी कमाई को ऊँट के मुंह में जीरा की माफिक महसूस करते हैं ।इतनी तीव्र गति से आया परिवर्तन उन्हें शारीरिक एवं मानसिक रूप से व्यथित करता है । आज के प्रतिस्पर्द्धा युग में प्रत्येक व्यक्ति को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है,चाहे वह शिक्षा क्षेत्र हो ,कार्यक्षेत्र हो अथवा जीवन स्तर ऊंचा उठाने की होड हो. प्रत्येक इंसान को अधिकतम भौतिक वस्तुओं को पा लेने के लिए दौड़ लगानी पड़ रही है । जिसके लिए उसे अपने जीवन का अधिक से अधिक समय व्यय करना पड़ता है उसके पास अपने लिए,अपनों के लिए समय नहीं बच पाता,या बहुत कम बचता है । उसका समयाभाव बुजुर्ग को अपने प्रति उपेक्षा का अहसास कराता है । शीघ्र धनाढ्य बनने की लालसा ने युवा को क्रोधी,एवं बेरुखा कर दिया है.युवा पीढ़ी की कार्यशैली से घर का बुजुर्ग परेशान हो जाता है और वह अपनी संतान को संवेदनहीन, अहसान फरामोश मानता है । नयी कार्य शैली एवं जीवन शैली उन्हें रास नहीं आती. वे अपने कार्यकाल के समय को उचित ठहराते हैं ।

आज हमारे समाज में वृद्ध लोगों को दोयम दर्जे के व्यवहार का सामना करना पड़ रहा है। देश में तेजी से सामाजिक परिवर्तनों का दौर चालू है और इस कारण वृद्धों की समस्याएं विकराल रूप धारण कर रही हैं। इसका मुख्य कारण देश में उत्पादक एवं मृत्यु दर का घटना एवं राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जनसंख्या की गतिशीलता है। देश में जल्दी ही यह विषमता आने वाली है कि वृद्धजन, जो कि जनसंख्या का अनुत्पादक वर्ग है, वह शीघ्र ही उत्पादक वर्ग से बड़ा होने वाला है ।

21वीं सदी में वृद्धों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि होने की संभावना है। विकसित राष्ट्रों में स्वास्थ्य एवं समुचित चिकित्सीय सुविधा के चलते व्यक्ति अधिक वर्षों तक जीवित रहते हैं अतः वृद्धों की जनसंख्या विकासशील राष्ट्रों से ज्यादा विकसित राष्ट्रों में ज्यादा है । भारत एवं चीन, जो कि विश्व की जनसंख्या का अधिकांश हिस्सा रखते हैं, इनमें भी बेहतर स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधा के चलते वृद्धों की जनसंख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में वृद्धजनों की संख्या 10.38 करोड़ है । यद्यपि यह समस्या इतनी गंभीर नहीं है जितनी वृद्धों के समाज में समन्वय की समस्या है। वृद्धों के समाज में समन्वय न होने के 2 मुख्य कारण हैं– 1.उम्र बढ़ने से व्यक्तिगत परिवर्तन, 2. वर्तमान औद्योगिक समाज का अपने वृद्धों से व्यवहार का तरीका। जैसे–जैसे व्यक्ति वृद्ध होता जाता है, समाज में उसका स्थान एवं रोल बदलने लगता है ।

भारतीय संस्कृति में वृद्धों को अत्यंत उच्च एवं आदर्श स्थान प्राप्त है। श्रवण कुमार ने अपने वृद्ध माता–पिता को कंधे पर बिठाकर संपूर्ण तीर्थयात्रा करवाई थीं। आज भी अधिकांश परिवारों में वृद्धों को ही परिवार का मुखिया माना जाता है ।कितनी विडंबना है कि पूरे परिवार पर बरगद की तरह छांव फैलाने वाला व्यक्ति वृद्धावस्था में अकेला, असहाय एवं बहिष्कृत जीवन जीता है। जीवनभर अपने मन, कर्म व वचन से रक्षा करने वाला, पौधों से पेड़ बनाने वाला व्यक्ति घर में एक कोने में उपेक्षित पड़ा रहता है या अस्पताल या वृद्धाश्रम में अपनी मौत की प्रतीक्षा करता है। आधुनिक उपभोक्ता संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों के क्षरण की यह परिणति है ।आज के वैश्विक समाज में वृद्धों को अनुत्पादक, दूसरों पर आश्रित, सामाजिक स्वतंत्रता से दूर अपने परिवार एवं आश्रितों से उपेक्षित एवं युवा लोगों पर भार की दृष्टि से देखा जाता है। जब तक हम वृद्धजनों की कीमत नहीं समझेंगे, उस उम्र की पीड़ा का अहसास नहीं करेंगे, तब तक हमारी सारी अच्छाइयां बनावटी होंगी ।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा के क्रम में विभिन्न आचार्यों द्वारा लिखित पुस्तकों का अवलोकन किया गया है जिसमें :

अग्रवाल, गिरिराजशरण 2004) वृद्धावस्था की कहानियाँ, वृद्धावस्था में शरीर अशक्त हो जाने के कारण बीमारियाँ जल्दी पकड़ लेता है। परन्तु कार्यमुक्त होने के कारण अधिकतर बुजुर्गों के पास धन का अभाव होता है और बीमारियाँ बुढ़ापे की मुश्किलों का पर्याप्त कारण बन जाती हैं।

प्रसाद, चन्द्र मौलेश्वर (2016) वृद्धावस्था विम'र्ष, अनेक वृद्धों को आर्थिक रूप से अपने परिजनों जैसे पुत्र, पुत्री, भाई इ त्यादि पर निर्भर रहना पड़ता है, उसके व्यक्तिगत खर्चे परिजनों की आय से पूरे होते हैं। जिसमे अनेक बार असहज स्थितियों का सामना करना पड़ता है। व्यक्ति का आत्म सम्मान भी दांव पर लग जाता है। कभी कभी आवश्यकताएं पूर्ण भी नहीं हो पाती, बीमारी इत्यादि में साधनों का अभाव कचोटता है। उसे अनेक प्रकार की मानसिक वेदनाओं का शिकार होना पड़ता है। कभी कभी उसे आत्मग्लानि होती है, उसे अपना जीवन निरर्थक लगने लगता है। महिला वृद्ध जो पहले गृहणी रही है के लिए आर्थिक पर निर्भरता कोई व्यथा का कारण नहीं बनती क्योंकि वह पहले भी अपने पति पर निर्भर थी उसके पश्चात् अन्य परिजन पर निर्भर हो जाती है. अतः उसके लिए सिर्फ निर्भरता का स्रोत बदल जाता है। परन्तु पुरुष जिसका पहले पूरे परिवार पर बर्चस्व था, परिवार का पालनहार था और अब, उसे स्वयं किसी अन्य परिजन की आय

पर आधारित होना पड़ता है. यह स्थिति उसके आत्म सम्मान के लिए कष्टकारी होती है कभी कभी आत्मग्लानी का अहसास होता है।

राय, सत्येन्द्र नाथ (2016) वृद्धावस्था में सुखी जीवन समय के साथ परिवर्तित हो रही सामाजिक व्यवस्था ने बुजुर्गों के लिए अपनी सुरक्षा को लेकर चिंता बढा दी है। संयुक्त परिवार बिखर कर एकल परिवार बन चुके हैं। बढती जनसंख्या की समस्या, बढ़ता जीवन स्तर एवं बढती प्रतिस्पर्द्धा के कारण प्रत्येक समझदार दम्पति के लिए सीमित परिवार की अवधारणा को स्वीकार करना आवश्यक हो गया है। क्योंकि प्रत्येक माता पिता की इच्छा होती है। वह अपने बच्चे को जीवन की सारी खुशियाँ उपलब्ध करा पायें। अच्छी से अच्छी शिक्षा देकर उन्हें जीवन की ऊंचाइयों तक पहुंचा पायें। यह सब सीमित परिवार के होते हुए ही संभव है। जैसे जैसे पुत्र–पुत्री बड़े होते हैं, शिक्षित होते हैं, युवावस्था में प्रवेश करते हैं। पुत्री को विवाह कर ससुराल विदा करना होता है और पुत्र को अपने अच्छे भविष्य की तलाश में अपने परिवार अपने शहर से दूर जाना पड़ता है। अंत में परिवार में रह जाते हैं सिर्फ बुजुर्ग पति और पत्नी, यदि बेटा विदेश चला जाता है तो उसे लौटने में भी साल साल भर लग जाता है।

अध्ययन पद्धति

यह शोध आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक आलोचनात्मक अध्ययन पद्धति पर आधारित है। वर्त्तमान अध्ययन भारतीय समाज में वृद्धों की समस्याओं के कारण एवं समाधान के विविध पक्षों के अन्वेषण से संबंधित है अतः यह शोध आलेख मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर आधारित है। इस अध्ययन के लिए मूल अध्ययन स्रोत पत्र–पत्रिकाओं एवं दस्तावेज तथा विभिन्न आचार्यों द्वारा सम्पादित पुस्तकों द्वारा लिया है।

वर्णन एवं विश्लेषण

वृद्धों के समस्या के कारण

आज हमारे देश में समस्याओं को बढ़ने के अनेक कारण है जो समाज की देन है। लेकिन जैसे–जैसे पशिचमीकरण, भैतिकवाद का विकास हुआ वैसे–वैसे वृद्धों को उपेक्षा का शिकार होकर समस्याओं में घिर गये है। आज इन वृद्धों की समस्याओं के बहुत से कारण है, जो इस प्रकार हैः–

1. संयुक्त परिवार का विघटनः संयुक्त परिवारों का अशांत व घुटन भरा माहौल और नगरों की ओर तेजी से प्रस्थान करती हुई युवा पीढ़ी को अपने बुजुर्गों के प्रति उदासीनता ने आज हमारे समाज में गंभीर समस्या उत्पन्न कर दी है। यह वही देश है कि जहां की संस्कृति में परिवार के बुजुर्गों को भगवान के समान माना जाता थां । आज की नई युवा पीढ़ी न तो बड़ों के अनुशासन में रहना चाहती और न ही आदर सम्मान कारना चाहती है।

2. भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धिः भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धि होने के कारण औधोगीकरण व संस्कृतिकरण के फलस्वरूप आज की युवा पीढ़ी का रहन–सहन एवं जीवन शैली में बदलाव तेजी से देखा जा रहा है। इस युग में कोई भी व्यकित अपने कार्यों में इतना व्यस्त हो रहे है कि उन्हें अपने परिवार के सदस्यों के साथ बैठना अब आवश्यकता ही नही समझते है, जिसकी सबसे बड़ी पीड़ा बुजुर्गों को ही झेलनी पड़ती है। परिवार की अवधारणा केवल पति–पत्नी एवं बच्चों तक ही सीमित होने लगा है और ये वृद्ध समाज एवं परिवार के क्षेत्र या सीमा से बाहर होते जा रहे है। आज की युवा पीढ़ी अपनी भौतिक सुख–सुविधाओं को अधिक महत्व देते है और वृद्धों पर कम। व्यकित को अपने आराम की हर वस्तु खरीदने के लिए पर्याप्त पैसा होता है लेकिन वृद्धों के बीमारियों के लिए पैसे नहीं। नई पीढ़ी को अकेले रहने की ललक है और वे इन वृद्धों को भूल जाते है। जो पालन–पोषण के अनेकों कष्टों का सामना करते है और स्वप्न सजोते है कि यही बालक बुढ़ापे की लाठी बनेगा लेकिन वह तो निष्ठुरता, अनैतिकता, भौतिक सुख–सुविधा, पाश्चात्य सभ्यता की गोद में सो जाते है।

3. नई–पुरानी पीढ़ी के बीच फासलाः इसके संबंध में कुछ फासला हमेशा से रहा है जिसको पीढ़ी का अंतराल कहा जाता है। अगर विचार किया जाय तो यह पीढियों के आचार–विचार, जीवन शैली, सोच का अंतर ही है। हालांकि नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी विरासत में न केवल जीवन शैली वरन जीवन दर्शन भी पाती है। अपने लिए सारे परिवर्तन या सशोधन भी उसी में से करती है। फिर भी न जाने क्यों पुरानी पीढ़ी उसे बोझ सी लगती है। इसका कारण है कि पुरानी पीढ़ी नई पीढी से सहमत नहीं हे पती है।

4. धन का महत्वः आज के युग में धन का महत्व बढ़ने के कारण वह धन कमाने में वे इतना व्यस्त हैं कि उन्हे दूसरों को ध्यान देने का समय नहीं है। बच्चे बड़े होकर माता–पिता को तभी अपनाते है जब तक उनके पास धन होता है धन समाप्त होन के बाद उनके वृद्धों का कोई महत्व नहीं बचता है और वे बोझ बन कर रह जाते है।

5. व्यकिगत स्वार्थः आज के युग में नई पीढ़ी स्वार्थी हो गई है। वह अपना स्वार्थ देखकर ही कार्य करती है वह अपने परिवार के वृद्धों की देखभल तभी करते है जब वह समझते है कि उन्हे धन–दौलत, संपति प्राप्त हो सकती है वह अपने स्वार्थों के प्रापित के लिए प्रेरित हो जाते है। उनके अंदर अपने बुजुर्गों के प्रतिसाद सेवा, दया एवं त्याग कम होता जा रहा है क्योंकि वह वृद्धों की सेवा व कर्तव्य को अपनी स्वतंत्रता में बाधक मानते है। इसलिए व अपने हित के लिए वृद्धों को अनदेखा कर देते है।

वृद्ध पुरूषों की समस्याएं

वृद्धावस्था को जीवन का अंतिम पड़ाव एवं समस्या से घिरी हुई अवस्था माना जाता है क्योंकि इस अवस्था में वृद्धों को अनेक समस्याएं घेर लेती है, जिसके परिणामस्वरूप दूसरों के साथ संबंध स्थापित करने में असमर्थ रहते है। समय की रफ्तार के साथ–साथ समाज में नये नये परिवर्तन होने लगे हैं। नई पीढ़ी के लोग पुराने विचारों के लोगों को अपने जीवन में आने को उपयुक्त नही समझते है। इस कारण युवा पीढ़ी उनके अनुभवों एवं विचारों की उपेक्षा करते है। वद्धों की समस्याओं एवं उनकी उपयोगिता भी समाज में कम होती नजर आने लगी है, जो इस प्रकार हैः–

1. शारीरिक समस्याः वृद्धावस्था उतरते या ढलते काल है। इस अवस्था में शरीर शिथिल होने लगते है। वृद्धावस्था में शरीर में बदलाव का परिणाम सामाजिक बदलाव पर होता है। इस अवस्था में अनेक समस्याएं निर्मित होती है। कोई व्यकित 60 साल में भी जवान दिखाई देता है तो कोई 40 साल में ही वृद्ध दिखने लगता है। वृद्धावस्था में व्यक्ति के शरीर में झुर्रिया, चिड़चिड़ापन जैसे अनेक लक्षण दिखाई देने लगते है।

2. मानसिक समस्याः शारीरिक बदलाव के अनुसार मानसिक परिवर्तन भी होता है। इस अवस्था के प्रवेश करते ही मानसिक तनाव की सिथति बनने लगती है तथा लोगों से संपर्क बनाना सहयोगी या मित्रों के निधन हो जाने से मानसिक तनाव एक महत्वपूर्ण कारण है। सर्व विदित है कि यदि पति या पत्नी में से किसी एक की मृत्यु हो जाने से हीन भावना की वृद्धि होती है तथा आत्मविश्वास का अभाव दिखने लगता है जिससे मानसिक विकृत, अकेलापन आदि जैसे दोष निर्माण होते है। अतः समाज

को अपना कुछ भी उपयोग नहीं होने से निरूपयोगिता की भावना का जन्म होने लगता है।

3. स्वास्थ्य की समस्याः शारीरिक बदलाव के अनुसार मानसिक परिवर्तन भी होता है। इस अवस्था के प्रवेश करते ही स्वास्थ्य की समस्या बनने लगती है तथा लोगों से संपर्क बनाना सहयोगी या मित्रों के निधन हो जाने से स्वास्थ्य की समस्या एक महत्वपूर्ण कारण है।

4. आर्थिक समस्याः यह समस्या वृद्धों की महत्वपूर्ण समस्या है। वृद्धों को आर्थिक समस्या का अभाव ज्ञात होने लगता है। कार्य क्षमता की कमी होती है जिससे दूसरों पर निर्भरता बढने लगती है और युवाओं द्वारा या परिवार के सदस्यों द्वारा उन्हें अकेला छोड़ दिया जाता हैं।

5. पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याः सर्व विदित है कि इस अवस्था में शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर होने के कारण वे समूह एवं परिवार से अलग होने लगते है जिसके कारण सामाजिक व पारिवारिक संबंधों में बुरा असर होने लगता है। जहां तक मैने देखा है कि परिवार में सदस्यों के साथ मतभेद निमार्ण होने लगता है और नौकरी या व्यवसाय से मुक्त होने के कारण समाज एवं परिवार में उनका वर्चस्व, मान–सम्मान कम हाने लगता है, जिससे इन्हे अपना जीवन यापन करना कठिन हाने लगता है। प्रायः देखा जा रहा है कि आधुनिक युग में परिवार या समाज के युवओं की भावना एवं विचार में काफी बदलाव देखने को आता है, उनके सहन–सहन, व्यवहार आदि में अंतर हो जाता है।

6. अकेलापन की समस्याः परिवार से सामन्जस्य न कर पाना, अलगाव, पृथक्कीकरण की अनुभूति, युवा पढ़ी द्वारा वृद्ध के अनुभवों, विचारों, परामर्श को दुलक्षित करने के कारण उन्हे घर से अलग या वृद्धा आश्रमों में रखा जाना या घर से निकाल देने जैसी समस्याएं देखने को मिलती है, जिससे वृद्धों में अकेलापन की समस्या का निर्माण होता है।

7. घर व समाज में अनादर की समस्याः किसी भी वृद्ध को समाज व परिवार में मान–सम्मान की अपेक्षा होती है लेकिन आज के ष्ष्च्यात्य संस्कृति के प्रवेष होने के कारण वृद्धों का अनादर देखने को मिलने लगा है, जिससे उन्हें घर में अपेक्षानुसार मान–सम्मान की जगह अनादर मिलने लगा है।

8. पराबलंबन की भावना की समस्याः वृद्धावस्था एक ऐसी अवस्था है जब उसे अपने परिवार व बच्चों पर निर्भरता ज्यादा होती है और इस समय पर उन्हें घर व परिवार से अलग करने की रणनीति आज के समाज के युवा बनाने लगते है, तब उन्हें पराबलंबन की भावना की समस्या निर्माण होने लगती है।

वृद्धों के सम्मान हेतु जनचेतना जगाना होगा। वृद्धों की बेहतरी के लिए विशेष योजनाओं का क्रियान्वयन जरूरी है। हमें निम्न तरीकों से वृद्धों के सम्मान में वृद्धि करनी होगी :

- बहुसंस्कृति जागरूकता पर हमें ध्यान देना होगा ।
- वृद्धों को काम के बदले ज्यादा पैसा मिलना चाहिए, इस संबंध में सरकारों को नए नियम बनाने होंगे ।
- वृद्धों को अधिमान्यता देने में वृद्धों की समस्याएं सुलझ सकती हैं। नौकरियों में जहां बुद्धि एवं सोच की आवश्यकता हैं, वहां वृद्धों को लाभ देना चाहिए ।
- परिवार एवं राज्यों को वृद्धजनों की सतत देखभाल करनी होगी। जहां पर उनके अधिकारों का हनन हो रहा हो, वहां कड़ी कार्रवाई की आवश्यकता है ।
- वृद्धों को समाज में प्रमुखता मिलनी चाहिए ताकि उनके जीवन को सार्थकता का एहसास हो। उनकी सामाजिक कार्यों में संलिप्तता एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़ाव उनके जीवन को नई स्फूर्ति प्रदान करेगा ।
- परिवार के निर्णयों में वृद्ध लोगों को शामिल करें ताकि उन्हें अपनी महत्ता का अहसास बना रहे ।
- वृद्ध व्यक्तियों को उनके मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य की देखभाल की पूर्ण सुविधा मिलनी चाहिए ताकि वे मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक रूप से स्वस्थ रहें ।
- वृद्ध व्यक्तियों को उनकी ऊर्जा के साथ शिक्षा, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं मनोरंजन के स्रोतों को अपनाने की पूर्ण सुविधा मिलनी चाहिए जिससे कि उनमें परिपूर्णता का बोध हो ।
- वृद्ध लोगों को पूर्ण सम्मान एवं सुरक्षा की गारंटी मिलनी चाहिए ताकि वे मानसिक एवं शारीरिक शोषण से बच सकें।
- परिवार के वृद्धजनों को भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक सहायता की अत्यंत आवश्यकता होती है ताकि वे अकेलेपन या अवसाद की स्थति में न आ पाएं ।
- वृद्ध लोगों को आर्थिक स्वतंत्रता बहुत जरूरी है। उनके पास पर्याप्त पैसा होना जरूरी है ताकि उनमें असुरक्षा की भावना समाप्त हो जाए एवं वे अपनी जरूरतों के मुताबिक खर्च कर सकें ।

हमारे संविधान में वृद्धजनों को पूर्ण सुरक्षा प्रदान की गई है। वृद्धजनों के संवैधानिक एवं कानूनी अधिकारों की व्याख्या निम्नानुसार है–

1. संवैधानिक अधिकारः भारतीय संविधान के अनुच्छेद 24 की सूची 3 एवं धारा 6 में वृद्ध लोगों के अधिकारों की चर्चा की गई है। इसमें कार्य की दशाओं, भविष्यनिधि, अशक्तता तथा वृद्धावस्था पेंशन की चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त राजसूची के मद संख्या 9 एवं समवर्ती सूची की मद संख्या 20, 23 एवं 24 में पेंशन, सामाजिक सुरक्षा तथा सामाजिक बीमा के अधिकार दिए गए हैं। राज्य के नीति–निदेशक सिद्धांत के अनुच्छेद 41 के अनुसार राज्य अपनी आर्थिक क्षमता एवं विकास की सीमाओं के भीतर वृद्धजनों के रोजगार, शिक्षा, बीमारी एवं विकलांगता की स्थिति में सार्वजनिक सहायता के अधिकार को सुरक्षित करेगा एवं इसके लिए कारगर प्रावधान बनाएगा।

2. कानूनी अधिकारः माता–पिता की देखभाल करना हर व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी है किंतु विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं में इसके लिए अलग–अलग जिम्मेदारियां कानून ने निर्धारित की हैं।

हिन्दू कानूनः साधनविहीन माता–पिता अपने भरण–पोषण के लिए साधन–संपन्न बच्चों पर दावा प्रस्तुत कर सकते हैं। इस अधिकार को कानून आपराधिक प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 125 (1) (डी) तथा हिन्दू दत्तक भरण–पोषण अधिनियम 1956 की धारा 20 (1 एवं 3) द्वारा मान्यता दी गई है। इस धारा से स्पष्ट है कि अभिभावकों के भरण–पोषण की जिम्मेदारी पुत्रों के साथ–साथ पुत्रियों की भी है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस धारा के अंतर्गत सिर्फ वे ही अभिभावक आते हैं, जो भरण–पोषण करने में आर्थिक रूप से असमर्थ हैं।

मुस्लिम कानूनः तैयबजी के अनुसार माता–पिता या दादा–दादी आर्थिक विपन्नताओं की स्थिति में हनाफी नियम के अनुसार अपने पुत्र–पुत्रियों या नाती–नातिनों से भरण–पोषण की मांग कर सकते हैं एवं ये अपने माता–पिता की सहायता के लिए बाध्य हैं।

ईसाई एवं पारसी कानूनः ईसाई एवं पारसियों के अभिभावकों के भरण–पोषण के लिए कोई व्यक्तिगत कानून नहीं हैं। जो अभिभावक भरण–पोषण चाहते हैं, वे आपराधिक प्रक्रिया संहिता के तहत भरण–पोषण की मांग कर सकते हैं।

आपराधिक प्रक्रिया संहिता 1973 एक धर्मनिरपेक्ष कानून है तथा ये सभी धर्मों एवं समुदायों पर लागू होता है। इस संहिता के तहत धारा 125 (1) में प्रावधान है कि जो माता–पिता अपने भरण–पोषण में असमर्थ हैं, यदि उनके पुत्र या पुत्रियां उनके भरण–पोषण से इंकार करते हैं तो प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट उस व्यक्ति को अपने माता–पिता के भरण–पोषण के इंकार के प्रमाण के आधार पर मासिक भत्ता देने के आदेश दे सकता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सर्वप्रथम संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में वृद्धजनों की समस्याओं पर अर्जेंटीना में 1948 में चर्चा हुई थी। 16 दिसंबर 1991 में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में प्रस्ताव पारित कर वृद्धजनों के हित में 18 सिद्धांतों को अधिमान्य किया गया जिन्हें 5 भागों में बांटा गया है– 1. स्वतंत्रता, 2. भागीदारी, 3. देखभाल, 4. स्वपूर्णता, 5. सम्मान। संयुक्त राष्ट्र संघ में 1999 को 1 अक्टूबर को 'अंतरराष्ट्रीय वृद्ध दिवस' मनाने का संकल्प पारित किया गया।

निष्कर्ष व सुझाव

वृद्ध लोग समाज के लिए बहुत उपयोगी हो सकते है लेकिन उनके अनुभवों का उपयोग समाज अच्छी तरह नहीं कर रहा है। अधिकांश वृद्धों ने अपनी समस्याओं के निराकरण के लिए यह सुझाव दिया कि बच्चों को समाज के लोगों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे वे वृद्धों का आदर करना सीखें। दूसरा मुख्य सुझाव आर्थिक सहायता का है। शारीरिक समस्या वृद्धों की प्रमुखतम समस्या है। वृद्धों के लिए बेहतर स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध कराया जाए एवं स्वास्थ्य शिक्षा के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाय। वृद्धों की आर्थिक समस्या कम करने के लिए और अकेलापन की भावना इत्यादि को कम करने के लिए वृद्धों के लिए स्वयं सहायता समूह विकसित किये जाए, जिससे उन्हें आर्थिक सहायता मिलेगी। उनका अनुभव विकसित होगा और अकेलेपन की भावना भी कम होगी। वृद्धों की समस्याओं को लेकर हर फोरम पर अभिव्यक्ति की जरूरत है। सामाजिक, राजनीतिक एवं भूमंडलीय स्तर पर गंभीरता से इन्हें सुलझाने का प्रयास किया जाना चाहिए। हमें वृद्धों के प्रति सही दृष्टिकोण, वृद्धों की जरूरतों एवं उनके जीवन को ध्यान में रखकर सही निर्णय लेने की आवश्यकता है। ऐसे सामाजिक तंत्र को विकसित करना होगा, जो वृद्धों की देखभाल बिना एक–दूसरे पर आक्षेप लगाकर कर सके। हमें समाज में यह चेतना जगानी होगी कि वृद्ध हमारी जिम्मेदारी नहीं, आवश्यकता हैं। वे जीवन के अनुभवों के खजाने हैं जिन्हें सहेजकर रखना हर समाज एवं संस्कृति का धर्म एवं नैतिक जवाबदारी है। "वृद्धावस्था को सम्मान पूर्वक एवं शांति पूर्वक व्यतीत करने के लिए सिर्फ आवश्यकताओं की पूर्ती हो जाने की आकांक्षा रखनी चाहिए एवं उसमें ही संतुष्ट रहना चाहिए न की अपनी प्रत्येक इच्छा पूर्ती के लिए जिद्दोजहद" ।

संदर्भ

1. अग्रवाल, गिरिराजशरण (2004) वृद्धावस्था की कहानियाँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 115–116.।
2. शिन्धाल, विनीता (2014) वृद्धावस्था : नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृ0 45–47।
3. शर्मा, स्वर्णा कान्ता (2014) वृद्धावस्थाः बागबाँ से आगे, बुका होलिक पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0 11–16 ।
4. प्रसाद, चन्द्र मौलेश्वर (2016) वृद्धावस्था विम'र्श, परिलेख प्रकाशन, नजीवाबाद, पृ0 15–16।
5. राय, सत्येन्द्र नाथ (2016) वृद्धावस्था में सुखी जीवन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 53–56।